अध्याय -5

अध्याय-5

खोज शैक्षिक निहितार्थ और ,निष्कर्ष

परिचय :

वर्तमान जांच का उद्देश्य D.El.Ed. विद्यार्थियों में सीखने की कठिनाइयों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। प्रथम अध्याय में वर्तमान जांच की शुरूआत की चर्चा की गई है। दूसरे अध्याय में संबंधित साहित्य की समीक्षा पर चर्चा की। तीसरे अध्याय में योजना पर प्रकाश डाला गया और वर्तमान अध्ययन की प्रक्रिया पर चर्चा की गई । चौथे अध्याय में विश्लेषण शामिल है और डेटा की व्याख्या। अंत में पाँचवाँ अध्याय अध्ययन के निष्कर्षों को सामने लाता है, शैक्षिक निहितार्थ, आगे के अध्ययन और निष्कर्ष के लिए सुझाव शामिल है ।

5.1. अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

शिक्षक एक ऐसा कलाकार है जो शारीरिक, मानसिक और मन की सामान्य शक्तियाँ को ढालता और आकार देता है । अपने कार्य को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए एक शिक्षक को अत्यधिक सक्षम होना चाहिए । एक सक्षम शिक्षक बनने के लिए चाहे वह सामान्य रूप से काम कर रहा

या विशेष स्कूल या समावेशी स्कूल विभिन्न विषयों में कठिनाइयों के विभिन्न पहलुओं के बारे में पूरी तरह से समझ होनी चाहिए। बच्चों में

सीखने में कठिनाई वाले बच्चों की पहचान करना शिक्षकों की जिम्मेदारी है । सीखने की कठिनाइयों की अवधारणा के बारे में एक शिक्षक को बेहतर जागरूकता होनी चाहिए ।

अध्ययन ड्रॉपआउट, अपव्यय एवं निष्क्रियता को रोकने के लिए एक रास्ता ढूंढने से संबंधित है । इस प्रकार प्राथमिक स्तर पर गुणवत्ता शिक्षा को बढ़ावा देना है । इसलिए प्रस्तुत लघु शोध भविष्य में बनने वाले प्राथमिक शिक्षक(D.El.Ed. विद्यार्थी) की प्राथमिक स्तर की जागरूकता को खोजने का प्रयास है ।

प्राथमिक स्तर पर ही अधिगम अक्षमता वाले बच्चों की पहचान ना होने पर उनके सीखने की गति एवं विकास पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को यदि नहीं रोका जाता है तो संपूर्ण जीवन की शिक्षा में ऐसे बच्चे पिछड़ापन के शिकार रहते हैं इसलिए आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर पर बनने वाले शिक्षकों को सीखने की कठिनाइयों के बारे में संपूर्ण ज्ञान हो । अध्यान द्वारा शिक्षक शिक्षा में निहित कमियों को पहचानना एवं उन्हें दूर करने के लिए शिक्षण कार्यक्रम बनाने में मदद मिल सकती है ।

5.2 समस्या का विवरण

वर्तमान अध्ययन में समस्या का कथन D.El.Ed. विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता के प्रति जागरूकता का अध्ययन ।

5.3: शोध शीर्षक में प्रयुक्त पदों की परिभाषाएं:

D.Ed. : यह एक प्रमाण पत्र स्तर शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स है जो प्राथमिक शिक्षा में सुधार हेतु भावी शिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण देने का कार्य करता है

अधिगम अक्षमता : ऐसी बौद्धिक अक्षमता है जिसमें बच्चे को लिखने, पढ़ने, बोलने, गणितीय कार्यों, दूसरों की बात समझने और अपनी बात समझाने में कठिन आती है ।

जागरूकता : किसी भी संबंध में उसका ज्ञान, जानकारी, बोध और उसके प्रभाव का ज्ञान जागरूकता कहलाता है ।

5.4: शोध के उद्देश्य :

1) D.El.Ed. विद्यार्थी की अधिगम कठिनाइयों के बारे में जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना ।

2) D.El.Ed विद्यार्थी की अधिगम कठिनाइयों की अवधारणा के बारे में जागरूकता का अध्ययन करना

3) D.El.Ed विद्यार्थी की अधिगम कठिनाइयों के प्रकारों के बारे मे जागरूकता का अध्ययन करना ।

5.5. अनुसंधान डिजाइन

जैसा कि वर्तमान अध्ययन D.El.Ed. विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता के प्रति जागरूकता का अध्ययन से संबंधित है । अन्वेषक द्वारा वह सर्वेक्षण विधि अपनाई गई जो आवश्यक और प्रासंगिक डेटा एकत्र करने के लिए उपयुक्त पाई गई।

5.6: डेटा संग्रह के लिए उपकरण

D.El.Ed. विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता के बारे में जागरूकता का पता लगाने के लिए अन्वेषक द्वारा प्रश्नावली का निर्माण किया गया

5.7: उपकरण का विवरण

D.El.Ed. विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता के बारे में जागरूकता का पता लगाने के लिए अन्वेषक ने प्रश्नावली का निर्माण किया अन्वेषक द्वारा अधिगम अक्षमता से संबंधित 20 प्रश्नों का चयन किया गया । कर्ता को डाटा शीट में प्रदान वस्तुओं को पढ़ना था और फिर अपनी प्रतिक्रिया को चिन्हित करना था ।

5.8: अध्ययन का नमूना

शोध के क्षेत्र के लिए भोपाल शहर का चयन किया गया । भोपाल शहर के DIET कॉलेज के 82 विद्यार्थियों का डाटा एकत्रित किया गया । अतः

DIET कॉलेज में D.El.Ed. के 120 विद्यार्थी हैं, परंतु कोविड-19 के कारण केवल 82 विद्यार्थियों द्वारा ही डाटा प्राप्त किया जा सका

5.9: अध्ययन में प्रयुक्त चर

अनुसंधान चर या वैज्ञानिक प्रयोग ऐसे कारक हैं जिन्हें जांच के दौरान मापा जा सकता है, हेरफेर किया जा सकता है और बदलने की संभावना है. एक चर वह चीज है जो विभिन्न संख्यात्मक या श्रेणीबद्ध मूल्यों को ले सकती है। चर एक अनुसंधान परियोजना के भीतर महत्वपूर्ण महत्व की अवधारणा का प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसी अवधारणाएं हैं जो अनुसंधान की परिकल्पना का निर्माण करती हैं. कई प्रकार के चर हैं, लेकिन अधिकांश शोध विधियों के मुख्य चर स्वतंत्र चर और आश्रित चर हैं।.

5.9.1: स्वतंत्र चर

D.El.Ed. विद्यार्थियों की जागरूकता को अध्ययन के लिए स्वतंत्र चर को चुना गया है ।

5.10: आंकड़ा संग्रहण

अन्वेषक द्वारा अपने शोध संबंधित संस्थान DIET भोपाल के प्रधानाचार्य को अपने शोध प्रबंधन के उद्देश्य और कार्य के बारे में बता कर अपने कार्य के लिए अनुमति प्राप्त की प्रधानाचार्य निर्देशानुसार संस्थान के प्राध्यापक द्वारा अन्वेषक द्वारा गूगल फॉर्म पर तैयार प्रश्नावली की लिंक

D.El.Ed. विद्यार्थियों के ग्रुप पर शेयर कर दी गई । इस लिंक के साथ विद्यार्थियों को निर्देश भी दिए गए ।विद्यार्थियों द्वारा अपने ईमेल आईडी से इस प्रश्नावली को निश्चित समय में पूर्ण किया गया । अतः कोविड-19 महामारी के कारण लॉक डाउन हो जाने से सभी शैक्षिक संस्थान बंद करने पड़े इसलिए तकनीकी कठिनाइयों के कारण कई विद्यार्थियों से डाटा एकत्रित नहीं हो सका । फिर भी अधिक संख्या में विद्यार्थियों की भागीदारी रही ।

5.11: स्कोरिंग प्रक्रिया

सीखने की कठिनाइयों के प्रति जाग आप को मापने के लिए प्रश्नावली में दो और चार विकल्प वाले प्रश्नों को रखा गया । जिसमें सीखने की कठिनाइयों से संबंधित प्रश्नों के लिए सत्य और असत्य के साथ संबंधित करो के चार विकल्प दिए गए थे ।

5.12: अध्ययन की खोज

- छात्रों द्वारा सहयोजित माध्य कुल 7.83 था जिसका अर्थ है कि छात्रों ने केवल मध्यम स्तर के ज्ञान का प्रदर्शन किया यानी सीखने की अक्षमता के परीक्षण में कुल प्रश्न का 50%
- यह पाया गया कि 42% छात्रों ने 0-7 रेंज के बीच स्कोर किया, इस प्रकार एल.डी के बारे में जागरूकता के निम्न स्तर को दर्शाता है।38% छात्रों ने 8-14 के बीच स्कोर किया, इस प्रकार एल.डी. के बारे में

जागरूकता के मध्यम स्तर को दर्शाता है। और 2% छात्र 14-20 रेंज में स्कोर करने में सक्षम थे, इस प्रकार 2% छात्र L.Ds के लिए उच्च स्तर की जागरूकता के अंतर्गत आते हैं। समग्र चित्र दर्शाता है कि 2 छात्रों ने 14 से ऊपर स्कोर किया है जो हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि एल.डी. के बारे में शिक्षक के बीच जागरूकता पैदा करने की बहुत आवश्यकता है।

- तालिका 2 सीखने की कठिनाइयों की अवधारणाओं के संबंध में आइटम संख्या 1, 2, एवं 5 के 50% से अधिक विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिए, इसके अतिरिक्त आइटम संख्या 3, 7 एवं 9 उत्तर 50% से कम विद्यार्थियों ने दिए अर्थात 55.3% विद्यार्थियों को सीखने की कठिनाइयों की अवधारणा का ज्ञान नहीं था ।

- तालिका 4 में केवल आइटम संख्या 4 सही उत्तर दाताओं का प्रतिशत 52.40% है अर्थात 50% से ऊपर, अतः आइटम संख्या 6, 10, 12, 14, 16, 18 एवं 19 के सही उत्तर दाताओं का प्रतिशत 50% से कम है । अर्थात 60.3% विद्यार्थी सीखने की कठिनाइयों के प्रकार के बारे में जागरूकता नहीं रखते थे ।

5.13: अध्ययन का शैक्षिक कार्यान्वयन

वर्तमान शोध प्रबंधन भविष्य में बनने वाले शिक्षक बनने वाले विद्यार्थियों, शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए मददगार साबित होगा जो इस प्रकार हैं: -

1) विद्यार्थी इन परिणामों को देखकर सीखने की क्षमता के अपने

ज्ञान की स्वयं निर्मित परीक्षण की सहायता से तुलना करेंगे । परिणाम विद्यार्थियों को कक्षाओं, कार्यशाला एवं प्रशिक्षण में अधिगम अक्षमता के बारे में और अधिक जानने की रूचि पैदा करने में मदद करेंगे ।

2) शैक्षिक नीति निर्माताओं को इन परिणामों से लाभ होगा । शिक्षकों के प्रशिक्षण में कमियों को दूर करने एवं उनके पाठ्यक्रम में उपयोगी परिवर्तन करने में मदद मिलेगी ।

3) विद्यार्थी सीखने की अक्षमता के वास्तविक ज्ञान और सीखने की कठिनाइयों की अपनी वर्तमान धार नाका आकलन करने का भी प्रयास करेंगे।

4) भविष्य के शिक्षकों को सीखने की अक्षमता के बारे में अधिक ज्ञान होगा तथा ऐसे में वह स्वयं के परिणाम द्वारा धारणा और ज्ञान को और अधिक बेहतर करने की कोशिश करेंगे ।

5.14: आगे के अध्ययन के लिए सुझाव

शोधकर्ता आगे के अध्ययन के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत करता है।

1) अध्ययन की समस्या को विशेष बच्चों तक बढ़ाया जा सकता है।

2) सीखने की समस्या के स्थान पर अन्य विकृतियां ली जा सकती हैं

जैसे

i. ऑटिज्म
ii. सेरेब्रल पाल्सी
iii. सिकलसेल रोग

3) सीखने की अक्षमता के प्रति शिक्षकों का रवैया और जागरूकता का अध्ययन।

4) सीखने की अक्षमता के बारे में B.Ed. विद्यार्थियों की जागरूकता का अधअध्ययन ।

5) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों की सीखने की अक्षमता के बारे में जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन ।

5.15: अध्ययन की सीमा :

1) यह अध्ययन केवल DIET कॉलेज भोपाल के D.El.Ed. के 82 विद्यार्थियों तक ही सीमित है ।

2) अपने की अक्षमता की जागरूकता के बारे में D.El.Ed. विद्यार्थियों से केवल 20 वैकल्पिक प्रश्न ही पूछे गए ।

3) कोविड-19 महामारी के कारण शिक्षा संस्थानों के बंद हो जाने से अध्ययन से प्राप्त परिणामों के कारण का पता लगाने का समय और अवसर नहीं मिला ।

5.16: निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन के परिणाम से पता चला है कि सीखने की क्षमता के बारे में D.El.Ed. विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर कम है । जबकि D.El.Ed. करने वाले विद्यार्थी भविष्य में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक बनते हैं और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के ऊपर विद्यार्थियों की पूर्ण आवश्यकताओं को समझने और उन्हें पूरा करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है । यदि प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी की अधिगम से संबंधित समस्याओं की पहचान और समाधान सही समय पर नहीं किया जाए तो यह बच्चे के मानसिक, व्यावहारिक और सामाजिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव डालती है । सीखने की अक्षमता बच्चों में पाई जाने वाली एक ऐसी ही विकृति है जिसे विद्यालय में शिक्षक समझ नहीं पाते हैं और शिक्षकों की

जागरूकता की कमी बच्चे की अकादमिक प्रदर्शन पर बुरा प्रभाव डालती है । इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक बनने वाले विद्यार्थियों की सीखने की अक्षमता के बारे में पूर्ण जानकारी हो । ताकि वह भविष्य में अपने विद्यार्थियों की समस्या का सही आकलन कर उनकी समस्या का निवारण कर सकें ।